6

यीशु का बपतिस्मा

(3:13-17)

बहुत से लोगों को यीशु के बपतिस्मे की बात को समझना कठिन लगा। यीशु को क्षमा की आवश्यकता नहीं थी। बपतिस्मा लेने के द्वारा यीशु के ''सारी धार्मिकता को पूरा करना'' के रूप में पवित्र शास्त्र का यह ज़बर्दस्त भाग है।

ईश्वरीय निर्णय (3:13, 14)

[13]उस समय यीशु गलील से यरदन के किनारे पर यूहन्ना के पास उससे बपतिस्मा लेने आया। [14]परन्तु यूहन्ना यह कहकर उसे रोकने लगा कि मुझे तेरे हाथ से बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है, और तू मेरे पास आया है?

आयत 13. अपनी सार्वजनिक सेवकाई में जाने की तैयारी करते हुए, **यीशु** ने **यूहन्ना** बपतिस्मा देने वाले के पास जाकर बपतिस्मे के लिए उसे बपतिस्मा देने को कहने से आरम्भ किया। अनुवादित शब्द **आया** वही क्रियाशब्द है जिसका अनुवाद यूहन्ना की सेवकाई के आरम्भ में ''पाकर'' हुआ है (3:1)। यीशु के आने के सम्बन्ध में डोनल्ड ए. हैग्नर ने लिखा है, ''अब सुसमाचार का मुख्य व्यक्ति मंच पर आता है।''[1]

मत्ती के विवरण ने हमें यीशु द्वारा छोटे बालक के रूप में नासर के लिए जाने वाले समय (2:23) और उसके बपतिस्मे के समय का कोई उल्लेख नहीं है। लूका 3:23 हमें बताता है कि इस समय यीशु की ''लगभग तीस वर्ष की आयु'' थी। वह **गलील** में ''नासरत'' (मरकुस 1:9) से **यरदन** में बैतनिय्याह (यूहन्ना 1:28) को गया जहां यूहन्ना बपतिस्मा दे रहा था, ताकि **उससे बपतिस्मा** ले सके।

आयत 14. जब यीशु **यूहन्ना** के पास आया तो उस नबी को *लगा* कि वह मसीहा है। इन दोनों की उम्र में छह महीने का अन्तर था, और वे रिश्तेदार थे (लूका 1:36)। उन्होंने एक-दूसरे को बड़ा होते हुए कितना देखा केवल अनुमान है। वे बचपन के अपने वर्षों में यरूशलेम में फसह के कुछ समारोहों में मिलते थे (देखें लूका 2:41, 42)। परन्तु हो सकता है कि ये दोनों कुछ समय से बिल्कुल न मिले हों या उन्होंने एक-दूसरे को न देखा हो। शायद यूहन्ना कई सालों तक जंगल में एकांतवास में रहता था (लूका 1:80)।

पहले तो यूहन्ना यीशु को बपतिस्मा देने से हिचकिचाया। उसने कहा, ''**मुझे तेरे हाथ से बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है और तू मेरे पास आया है**?'' यूनानी धर्मशास्त्र में यूहन्ना का प्रश्न ज़ोर देते हुए लगता है। इसका अक्षरश: अनुवाद होगा ''*मुझे* तो *तुझ से* बपतिस्मा लेने की आवश्यक है, और *तू* मेरे पास आया है?'' मत्ती यीशु को बपतिस्मा देने की यूहन्ना की

हिचकिचाहट को दर्ज करने वाला सुसमाचार का अकेला लेखक था। डगलस आर. ए. लेयर ने टिप्पणी की, ''मत्ती शायद बपतिस्मा देने वाले अनुयायियों से खीझ गया था जिनका दावा था कि क्योंकि यीशु ने यूहन्ना से बपतिस्मा लेने के लिए अपने आपको उसके सुपुर्द किया था इस कारण यीशु अवश्य ही यूहन्ना से कम है।''[2] जिस कारण उसने यूहन्ना से इन शब्दों को शामिल करते हुए इस गलत विचार में सुधार किया। इस सुझाव की सम्भावना हो सकती है ''क्योंकि मत्ती के लिखने के समय पहली सदी के मध्य में यूहन्ना के चेले अभी भी थे'' (देखें प्रेरितों 19:1-7)। इसके अलावा यह गलत अवधारणा कि यीशु यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले से कम था आज भी मैंडियन सम्प्रदाय में पाया जाता है।[3]

ईश्वरीय उद्देश्य (3:15)

[15]यीशु ने उस को यह उत्तर दिया, अब तो ऐसा ही होने दे, क्योंकि हमें इसी रीति से सब धार्मिकता को पूरा करना उचित है। तब उसने उसकी बात मान ली।

आयत 15. यीशु ने यूहन्ना को यह कहते हुए उत्तर दिया, ''**अब तो ऐसा ही होने दे, क्योंकि हमें इसी रीति से सब धार्मिकता को पूरा करना उचित है।**'' जैसा कि पहले कहा गया था, यूहन्ना ''पापों की क्षमा के लिए'' बपतिस्मा दे रहा था (मरकुस 1:4), परन्तु यीशु ''पाप से अज्ञात'' था (2 कुरिन्थियों 5:21; देखें यूहन्ना 8:29; इब्रानियों 4:15; 7:26; 1 पतरस 2:21, 22; 1 यूहन्ना 3:5)। परन्तु उसे पूरी तरह से परमेश्वर की आज्ञा को पूरा करना आवश्यक था ताकि वह ''अपने सब आज्ञा माननेवालों के लिए सदा काल के उद्धार का कारण'' बन सके (इब्रानियों 5:9)। ''सब धार्मिकता को पूरा करना'' वाक्यांश के संक्षिप्त अर्थ पर तो बहस होती है पर यीशु के बपतिस्मे के सम्बन्ध में ये बातें पक्की:

1. उसने परमेश्वर की इच्छा को माना (21:25, 32; लूका 7:29, 30)।
2. उसने यूहन्ना की सेवकाई और बपतिस्मे को स्वीकृति दी।
3. उसने दूसरों के मानने के लिए एक नमूना ठहराया।
4. उसने विनम्रतापूर्वक अपने आपको पापियों के साथ मिलाया।
5. उसने अपनी सेवकाई का आरम्भ किया जो पापियों को धर्मी ठहराने के लिए उसकी मृत्यु में चरम पर पहुंचे (यशायाह 53:11; मत्ती 1:21)।
6. वह यूहन्ना पर मसीहा के रूप में प्रगट हुआ, इस कारण यूहन्ना ने उसे इस्राएल पर प्रगट किया (यूहन्ना 1:31, 32)।

तब उसने उसकी बात मान ली। संकेत देता है कि यूहन्ना ने यीशु के तर्क को मान लिया और उसे बपतिस्मा दिया।

ईश्वरीय साक्षी (3:16, 17)

[16]और यीशु बपतिस्मा लेकर तुरन्त पानी में से ऊपर आया, और देखो, उसके लिए आकाश खुल गया, और उसने परमेश्वर के आत्मा को कबूतर के समान उतरते और अपने ऊपर

आते देखा। [17]और देखो, यह आकाशवाणी हुई, यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिस से मैं अत्यन्त प्रसन्न हूं।

आयत 16. और यीशु बपतिस्मा लेकर तुरन्त पानी में से ऊपर आया। इस कथन से आवश्यक रूप में यह अर्थ मिलता है उसे पूरी तरह से डुबोया गया, जो कि ''बपतिस्मा'' शब्द का अर्थ है (देखें प्रेरितों 8:38, 39)। उस समय, **आकाश खुल गया**। यह भाषा परमेश्वर के प्रकाश के अनुभवों को दिखाने के लिए सामान्य बात (यशायाह 64:1; यहेजकेल 1:1; यूहन्ना 1:51; प्रेरितों 7:56; 10:11; प्रकाशितवाक्य 4:1)। यह घटना एक दर्शन था या वास्तव में घटी इस पर बहस हो सकती है। इससे जुड़ा प्रश्न यह है कि आत्मा के उतरने और परमेश्वर की आवाज को वहां उपस्थित हर किसी ने देखा और सुना या केवल यूहन्ना और यीशु ने (देखें यूहन्ना 5:37)।

और उसने परमेश्वर के आत्मा को कबूतर के समान उतरते और अपने ऊपर आते देखा। आत्मा की तुलना कबूतर से किए जाने को उसके उतरने के ढंग के सम्बन्ध में समझा जा सकता है। परन्तु लूका की तुलना निश्चित रूप से शारीरिक रूप से दिखाई देने से सम्बन्धित है: ''और पवित्र आत्मा शारीरिक रूप में कबूतर की नाई उस पर उतरा, और यह आकाशवाणी हुई, कि तू मेरा प्रिय पुत्र है, मैं तुझ से प्रसन्न हूं'' (लूका 3:22)। कबूतर विनम्रता और भोलेपन का प्रतीक था। इसके अलावा इस काल के दौरान यहूदी मत को कबूतर के साथ जोड़ा जाता है। जी. एफ. हेसर की व्याख्या है:

> प्रेरितों के एक छोटे समकालीन रब्बी बेनज़ोमा ने रब्बियों की एक परम्परा को उद्धृत किया है कि ''परमेश्वर का आत्मा पानी के ऊपर मण्डराता था [उत्पत्ति 1:2] जैसे कबूतर अपने बच्चों के ऊपर मण्डराता है पर उन्हें छूता नहीं'' [तालमुड *हेगिगाह* 15क]।[4]

कबूतर इस बात का चिह्न था जो यूहन्ना को उसकी पहचान के लिए दिया गया था जिसका मार्ग वह तैयार कर रहा था। बेशक यूहन्ना ने *सोचा* कि यीशु ही मसीहा है, जो उसके यीशु को बपतिस्मा देने से हिचकिचाने का कारण था, पर उसने उसे तब तक नहीं जाना जब तक आत्मा उसके ऊपर नहीं आता (यूहन्ना 1:29-34)। आत्मा ने प्रयोग के द्वारा प्रमाण का काम किया कि यीशु ही मसीह है।

इस घटना से यशायाह द्वारा की गई भविष्यवाणियां भी पूरी हुईं: ''यहोवा के भय का आत्मा उस पर ठहरा रहेगा'' (यशायाह 11:2); ''मैं ने उस पर अपना आत्मा रखा है'' (यशायाह 42:1); और ''प्रभु यहोवा का आत्मा मुझ पर है'' (यशायाह 61:1)। पवित्र आत्मा ही था जो मसीह को परमेश्वर के राज्य पर राजा होने के लिए अभिषेक कर रहा था। इसके अलावा जब यीशु वहां से गया तो वह पवित्र आत्मा की सामर्थ में होकर ''हर प्रकार की बीमारी को चंगा करके और दुष्टात्माओं को निकालते हुए अर्थात बुराई की शक्तियों को निकालते हुए गया जो उसके राज्य के लिए रुकावट थीं'' (12:28; प्रेरितों 10:38)।

आयत 17. पिता ने घोषणा की, **''यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिस से मैं अत्यन्त प्रसन्न हूं।''** यहां तीन में से पहली बार परमेश्वर ने अपने पुत्र के ईश्वरीय होने की घोषणा की (देखें 17:5; यूहन्ना 12:28)। यह शब्द न केवल पुराने नियम का सीधा उद्धरण है बल्कि वे कुछ विषयों को

स्मरण दिलाने वाले भी हैं। यीशु ईश्वरीय पुत्र अर्थात यहोवा का अभिषिक्त (भजन संहिता 2:7; देखें प्रेरितों 13:33; इब्रानियों 1:5; 5:5) है। वह परमेश्वर का दुलारा है और वह उससे अत्यन्त प्रसन्न है-''मेरे चुने हुए को, जिस से मेरा जी प्रसन्न है'' (यशायाह 42:1)। यह भाषा अब्राहम के प्रतिज्ञा किए हुए प्रिय पुत्र इसहाक के विवरण से भी मिलती-जुलती है जिसे उसे बलिदान करने के लिए चुना गया था (उत्पत्ति 22:2)।

परमेश्वरत्व के तीनों सदस्य[5] यीशु के बपतिस्मे के वक्त वहां थे। पवित्र आत्मा कबूतर के रूप में उतरा और यीशु पर ठहर गया। जब ये सब बातें हो रही थीं तो परमेश्वर ने अपने पुत्र के साथ अपने आनन्द को बताने के लिए स्वर्ग में बताया। परमेश्वरत्व के इन तीनों सदस्यों की यीशु के बपतिस्मे के समय उपस्थिति किसी भी व्यक्ति के लिए जो त्रिएकता से इनकार करता है सबसे बड़ी समस्या है। बाइबल चाहे ''त्रिएकता'' शब्द का कहीं इस्तेमाल नहीं करती पर कई वचनों में इस अवधारणा के सही होने की पुष्टि की गई है (28:19; यूहन्ना 1:1-3, 14; 17:1-26; 2 कुरिन्थियों 13:14; यहूदा 20, 21; देखें मरकुस 12:29)। यीशु परमेश्वर था परन्तु मनुष्य बन गया और हमारे बीच में रहा (यूहन्ना 1:1, 14)।

❖❖❖❖❖ **सबक** ❖❖❖❖❖

यीशु का बपतिस्मा (3:13-17)

इन तीन प्वायंटों के साथ यीशु के बपतिस्मे पर एक सबक बनाया जा सकता है:

1. ईश्वरीय निर्णय (3:13, 14);
2. ईश्वरीय उद्देश्य (3:15);
3. ईश्वरीय साक्षी (3:16);
4. ईश्वरीय उपस्थिति (3:17)।

यीशु का और हमारा बपतिस्मा (3:13-17)

कई बार तर्क दिया जाता है कि अपने बपतिस्मे में यीशु आज हमारे लिए नमूना ठहराता है। इस विचार में कुछ सच्चाई है पर तुलना करना जटिल बात है और इसका मूल्यांकन बड़े ही निर्णायक ढंग से होना चाहिए।

यीशु के बपतिस्मे और आज के बपतिस्मे में हम कुछ सामानताओं को देख सकते हैं। जैसा कि नया नियम बपतिस्मे की परिभाषा देता है, आज भी यह पानी में डुबकी ही है और किसी दूसरे द्वारा दिया जाता है (अपने आप लेने के विपरीत)। इसके अलावा यीशु की तरह ही बपतिस्मा लेने के इच्छुक व्यक्ति के लिए परमेश्वर की आज्ञा को सच्चे मन से मानने की इच्छा होनी चाहिए। इसके बाद आज जब कोई नये नियम के बपतिस्मे को लेता है तो उसे पवित्र आत्मा का दान मिलता है (प्रेरितों 2:38), चाहे यह गैर चमत्कारी दान ही है और उसे परमेश्वर की सन्तान घोषित किया जाता है (गलातियों 3:26, 27)।[6] यीशु को स्वयं आत्मा द्वारा अभिषेक किया गया था और अपने पुत्र के रूप में पिता द्वारा उसकी पुष्टि की गई थी। यीशु के बपतिस्मे और नये नियम के बपतिस्मे दोनों को परमेश्वर की सेवा (सेवकाई) के आरम्भिक प्वायंटों के

रूप में देखा जा सकता है।

जिस प्रकार से इनमें कई समानताएं हैं वैसे ही कई भिन्नताएं भी हैं। यीशु को यूहन्ना द्वारा बपतिस्मा दिया गया, जिसका तैयारी का बपतिस्मा अब मान्य नहीं है (प्रेरितों 19:1-7)। मसीह के क्रूस पर मरने से एक नई वाचा स्थापित हो गई। इसलिए नये नियम के बपतिस्मे में क्रूस पर चढ़ाए और जी उठे प्रभु में विश्वास करना आवश्यक है (मरकुस 16:16)। इस बपतिस्मे में मन फिराव भी आवश्यक है, जो मसीह के साथ नहीं था क्योंकि वह पाप रहित था। पश्चात्तापी विश्वासी अपने पाप क्षमा करवाने अर्थात मसीह के लहू के द्वारा धोए जाने के लिए नये नियम के बपतिस्मे के लिए अपने आपको देता है (प्रेरितों 2:38; 22:16; देखें प्रकाशितवाक्य 1:5)। उस कार्य में वह मसीह की मृत्यु और जी उठने को दर्शाता है (रोमियों 6:3, 4)। वह मसीह में एक नया व्यक्ति बन जाता है (रोमियों 6) और उसे मसीह द्वारा राज्य (कलीसिया) में मिला लिया जाता है (प्रेरितों 2:47; देखें 1 कुरिन्थियों 12:13)।

हर व्यक्ति को बपतिस्मा लेने में मसीह के अधीन होने का अनुसरण करना चाहिए पर उसे नये नियम के बपतिस्मे के विशेष अर्थ के बारे में भी बताया जाना चाहिए। यीशु का बपतिस्मा और नये नियम का बपतिस्मा दोनों एक नहीं हैं।

टिप्पणियां

[1]डोनल्ड ए. हैग्नर, *मैथ्यू 1-13,* वर्ड बिब्लिकल कमैंट्री, अंक 33ए (डलास: वर्ड बुक्स, 1993), 55. [2]डग्लस आर. ए. हेयर, *मैथ्यू,* इंटरप्रिटेशन (लुइसविल्ले: जॉन नॉक्स प्रैस, 1993), 20. [3]आधुनिक इराक और ईरान में आज भी मैंडेयी मत को माना जाता है। यह दूसरी शताब्दी ईस्वी पुराना एक प्राचीन नॉस्टिक धर्म है। मैंडियन लोग पर परम्परागत मसीही और यहूदी मत को नकारते हैं परन्तु यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले को अपने एक भविष्यवक्ता के रूप में ऊंचा करते हैं। उनके धर्म में मिथ्या, द्वैतवाद और जटिल संस्कार विशेष हैं। [4]*द इंटरनैशनल स्टैंडर्ड बाइबल इन्साइक्लोपीडिया,* संशो. संस्क., संपा. ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1979), 1:988 में जी. एस. हेसल, ''डव।'' [5]KJV द्वारा तीन यूनानी शब्दों का अनुवाद ''परमेश्वरत्व'' है (प्रेरितों 17:29; रोमियों 1:20; कुलुस्सियों 2:9)। [6]एन्थनी ली ऐश, *द गॉस्पल अक्कॉर्डिंग टू लूक,* पार्ट 1, द लिविंग वर्ड कमैंट्री (आस्टिन, टैक्सस: स्वीट, पब्लिशिंग कं., 1972), 77.